ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

200वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024 सदैव सत्य

वर्ष 46 | अंक 31 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 03 जुलाई, 2023 से रविवार 09 जुलाई, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती के दो वर्षीय आयोजनों की विश्वव्यापी श्रृंखला

आर्य प्रतिनिधि सभा आस्ट्रेलिया के तत्वावधान में सिडनी, ब्रिसबेन आदि विभिन्न स्थानों पर वेद प्रचार कार्यक्रम संपन्न

सभा महामंत्री विनय आर्य जी ने वैदिक धर्म विस्तार के कार्यक्रमों में लिया भाग

महर्षि दयानंद जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की तैयारी पर की विशेष चर्चा

मानवमात्र को निष्ठा पूर्वक कर्तव्य पालन का संदेश देता है– वैदिक धर्म

मानव सेवा और परोपकार से प्राप्त होगा जीवन का लक्ष्य और उद्देश्य –विनय आर्य

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के दो वर्षीय आयोजनों की वृहद श्रृंखला में जहां भारत के कोने-कोने में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गठित केंद्रीय संयोजन समिति के निर्देशन में विभिन्न आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों और अन्य अनेक आर्य संस्थाओं द्वारा ऐतिहासिक कार्यक्रम लगातार चल रहे हैं, वहीं आर्य प्रतिनिधि सभा ऑस्ट्रेलिया के तत्वावधान में वेदप्रचार के भव्य कार्यक्रम अपनी अपार सफलताओं के साथ संपन्न हो रहे हैं। 22 जून से लगातार वहां के सभी अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य महर्षि दयानंद सरस्वती जी महाराज की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस को लेकर अभूतपूर्व उत्साह, उमंग और उल्लास से भरे हुए हैं। वहां प्रतिदिन सुबह, दोपहर और शाम परिवारों में, आर्य समाजों में और दर्शनीय स्थलों पर महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं, आर्य समाज की मान्यताओं और वेदों

- शेष पृष्ठ 7 पर

आर्य प्रतिनिधि सभा ऑस्ट्रेलिया द्वारा आयोजित तीन दिवसीय वेद प्रचार कार्यक्रम में मुख्य अधिकारियों के साथ एवं वेद धर्म का संदेश देते हुए तथा वैदिक प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों के साथ सभा महामंत्री सर्वश्री विनय आर्य जी एवं श्रोतागण, स्वागत, वैदिक साहित्य वितरण एवं यज्ञ करते हुए प्रेरक चित्र।

30 जून से 2 जुलाई 2023 के बीच आर्य समाज ब्रिसबेन आस्ट्रेलिया में वेद प्रचार के दौरान प्रवचन करते हुए सर्वश्री विनय आर्य जी, श्रोतागण, विशेष उदबोधन देते हुए डॉ. सुखबीर जी एवं सामूहिक चित्रों में वॉरेन एरिक एम.पी. एवं विनय आर्य जी के साथ वहां के अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्य तथा आर्य परिवारों के होनहार बच्चे।

वेदवाणी-संस्कृत

मझे सबका प्यारा बनाओ

वेद-स्वाध्याय

प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु।
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये।।
-अथर्व० 19 । 62 । 1
ऋषिः- जेतामाधुच्छन्दसः।। देवता- इन्द्रः ।। छन्दः- अनुष्टुप्।।

शब्दार्थ- हे प्रभो! **मा**=मुझे **देवेषु**=देवों में (ब्राह्मणों में) **प्रियं कृणु**=प्यारा करो **मा**=मुझे **राजसु**=राजाओं में (क्षत्रियों में) **प्रियं कृणु**=प्यारा करो, **सर्वस्य पश्यतः**=सब देखने वालों का भी **प्रियम्**=प्यारा करो, **उत शूद्रे**=शूद्र में भी और **उत आर्ये**=आर्य में भी, सबमें, मुझे प्यारा बनाओ।

विनय- हे मेरे प्यारे प्रभो! तुम मुझे सबका प्यारा बनाओ। मैं यदि सचमुच तुम्हारा प्यारा बनना चाहता हूँ तो मुझे तुम्हारे इस सब जगत् का प्यारा बनना चाहिए। तुम तो इस जगत् में सर्वत्र हो, छोटे-बड़े, ऊँचे-नीचे सभी प्राणियों में मन्दिर बनाकर बसे हुए हो। यदि इन रूपों में मैं तुमसे प्यार न कर सकूँ तो मैं तुम्हें प्यारा कहके क्यों पुकार सकूँ? ये सांसारिक लोग बेशक अपने से बड़ों, बलवानों, धनवानों और प्रतिष्ठावालों के ही प्यारे बनना चाहते हैं, अपने से छोटों, गरीबों, दलितों और असहायों के प्यारे बनने की कोई आवश्यकता नहीं समझते। ये बेशक अपने राजाओं और स्वामियों का प्रेम पाना चाहते हैं, किन्तु अपनी प्रजा और नौकरों का प्रेम पाने की कभी इच्छा नहीं करते, परन्तु इसी में तो तुम्हारे सच्चे प्रेमी होने की परीक्षा होती है, क्योंकि इन गरीबों, पीड़ितों असहायों का प्रेम चाहना ही असल में तुमसे प्रेम करना है। बलियों, धनियों और राजाओं से प्रेम की इच्छा करना तो सांसारिक बल से, सांसारिक धन से, सांसारिक प्रभुत्व से प्रेम करना है, तुमसे प्रेम करना नहीं है। इसलिए मुझे तो तुम जहाँ देवों और राजाओं का प्यारा बनाओ, वहाँ इन सब देखने वाले सामान्य लोगों का तथा नौकरों और सेवकों का भी प्यारा बनाओ। जहाँ ब्राह्मणों और क्षत्रियों का प्यारा बनाओ वहाँ इस सामान्य प्रजाओं (वैश्यों) और शूद्रों का भी प्यारा बनाओ। शूद्रों और आर्यों का, नीचों और ऊँचों का, शिष्यों और गुरुओं का, सेवकों और स्वामियों का, अधीनों और अधिकारियों का, सब छोटों और बड़ों का मुझे प्यारा बनाओ। मुझे ऐसा बनाओ कि इस संसार में जो कोई मुझे देखे, मेरे सम्पर्क में आये, वह मुझसे प्यार करे। हे प्रभो! मैं तो तुम्हारे इस सब संसार से प्रेम की भिक्षा माँगता हूँ, क्योंकि मैं देखता हूँ कि जब तक मैं तुम्हारे इस छोटे-बड़े समस्त संसार से प्रेम नहीं करूँगा तब तक, हे मेरे प्यारे! मैं कभी तुम्हारे प्रेम का भाजन न हो सकूँगा, तुम्हारे प्रेम का अधिकारी न बन सकूँगा।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

जब जाति ही सुनिश्चित नहीं तब जातिगत आरक्षण कैसा?

मुस्लिम समुदाय में जातिवाद और भेदभाव के भरमार की समीक्षा

आर्य समाज हमेशा से संपूर्ण मानवजाति को एक ईश्वर की संतान मानता आया है। वैदिक सिद्धांतों के अनुसार चार वर्ण और चार आश्रमों की मान्यता के साथ हर तरह के भेद-भाव, ऊंच-नीच, जात-पात से ऊपर उठकर जीवन जीने की शिक्षा देना, अपनी प्राचीन संस्कृति और संस्कारों के प्रति समाज को जागरूक करना, समय समय पर समाज सुधार के लिए आंदोलन करना आर्य समाज की परंपरा रही है। इसके लिए हमारे पूर्वजों ने समाज में उपेक्षित, तिरस्कृत दलित भाइयों को, जिन्हें समाज नीची जाति का समझकर विवाह के समय घोड़ी पर भी बैठने नहीं देता था, उनकी बारात में दूल्हा पैदल चलकर ही दुल्हन के द्वार तक पहुंचता था, जबकि तथाकथित सवर्ण जातियों के दूल्हे घोड़ी पर बैठकर जाते थे, इस भेदभाव को मिटाने के लिए आर्य समाज ने लंबी लड़ाई लड़ी और उन्हें उनका अधिकार दिलाया। इसके लिए हमारे महापुरुषों ने अपनी जान की परवाह न करते हुए लाठी और डंडों के प्रहार झेले। आर्य समाज का यह आंदोलन डोला पालकी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस तरह आर्य समाज द्वारा अंतर्जातीय विवाह का समर्थन किया गया और आर्य समाज के अग्रणी नेताओं ने अपने घरों से इसकी शुरुआत की। इस ऊंच-नीच और जातिवाद को समाप्त करने के लिए अपने बच्चों का उनकी सहमति से अंतर्जातीय विवाह किया। इससे भी आगे सभी जातियों के युवाओं को अपने गुण कर्म स्वभाव के अनुरूप अपना जीवन साथी चुनने का अधिकार दिलाया तथा इसको लेकर Arya marriage validation act-1937 कानून का निर्माण भी कराया। इस तरह समाज में जातिवाद और भेदभाव की खाई को पाटने का काम आर्य समाज अपनी स्थापना से लेकर अब तक लगातार पूरी निष्ठा के साथ करता आ रहा है।

समाज सुधार के इस आंदोलनकारी अभियान में आज जब समान नागरिक संहिता कानून की बात आई तो संपूर्ण आर्य जगत देश की एकता, अखंडता और मजबूती के लिए सरकार के इस महत्वपूर्ण कदम का पूरा समर्थन कर रहा है और अपने सुझाव भी लगातार सरकार को भेज रहा है। इसके पीछे आर्य समाज की भावना यही है कि जब पूरे देश में क्रमिनल कानून एक समान है तो सबके लिए सिविल कानून अलग अलग क्यों होंगे? क्या मुस्लिम समुदाय की महिलाएं महिलाएं नहीं हैं, उनके भीतर संवेदना नहीं है, मुस्लिम महिलाएं तो एक पति के प्रति समर्पित रहे और मुस्लिम पुरुष चार-चार शादी करके व्यभिचार करें, मुस्लिम महिलाओं को हलाला, इद्दत और तीन तलाक जैसी अमानवीय अन्याय पूर्ण रीति-रिवाजों के नाम पर यातनाओं को अनावश्यक क्यों झेलना पड़े? इससे भी आगे अगर किसी मुस्लिम महिला के किसी भी कारण से संतान न हो तो वह किसी बच्चे को कानूनन गोद भी नहीं ले सकती, अपने पिता की संपत्ति में से भी हिस्सा नहीं ले सकती, क्योंकि उपरोक्त सारी असमानताओं के लिए उनका यही बहाना है कि उनके मजहबी कानून अलग हैं और वे उसके हिसाब से ही कार्य करते हैं। गहराई से देखा जाए तो इस वर्ग विशेष का यह केवल बहाना है, असल में ये अपने मजहबी कानून का भी अपने लाभ और हानि के हिसाब से प्रयोग करते हैं।

> **“आरक्षण की मौजूदा व्यवस्था में मुसलमानों को अनुसूचित जाति वर्ग में आरक्षण नहीं मिलता है। उन्हें अन्य पिछड़ा वर्ग (ओ.बी.सी.) में ही आरक्षण का लाभ मिलता है। दरअसल केंद्र की ओ.बी.सी. सूची में मुसलमान जैसा कोई शब्द दर्ज नहीं है। लेकिन बुनकर शब्द उल्लेखित है। बुनकरों में हिंदू और मुसलमान दोनों ही शामिल हैं। लिहाजा बुनकर मुस्लिम है तो उन्हें जाति प्रमाण-पत्र मिल जाता है। हालांकि अपवादस्वरूप मुसलमान जाति का जिक्र करते हैं। इनमें मोमिन और जुलाहा जैसे जाति समुदाय शामिल हैं, इन्हें ओ.बी.सी. का जातीय प्रमाण-पत्र मिल जाता है। लेकिन बड़ा विषय यही है कि यदि सरकारी रिकॉर्ड में जाति का उल्लेख नहीं है, तो फिर जातीय प्रमाण-पत्र कैसे मिल सकता है?”**

मुस्लिम समुदाय हमेशा से यह कहता आ रहा है कि इस्लाम में जाति व्यवस्था नहीं है। इस भ्रम के जरिए मुसलमानों में जातीय कुचक्र को अब तक छिपाया जाता रहा है। लेकिन पिछले दिनों बॉम्बे हाईकोर्ट ने इनके इस झूठ को कानूनी कसौटी पर परखने का फैसला किया तो इनकी सारी पोल खुल गयी। दरअसल मुसलमानों में जातियां तो हैं, लेकिन दस्तावेजों में उनके लिखने का प्रचलन नहीं है। मुसलमानों में यह उदारता कुटिल चतुराई का पर्याय है। ये चालाक लोग आरक्षण प्राप्त करने के लिए भी यही कहते हैं कि हमारे यहां जातिवाद नहीं है, इसलिए जाति प्रमाण पत्र भी हमारे पास नहीं है, जबकि आरक्षण प्राप्ति का आवेदक आरक्षित वर्ग या जाति से है अथवा नहीं? इसी प्रकृति का एक मामला बॉम्बे हाईकोर्ट में आया था। जुबेरिया रियाज अहमद शेख बनाम महाराष्ट्र सरकार नाम से है। इस दलील के समर्थन में इसी हाईकोर्ट के पंजीबद्ध इस मामले में अदालत ने 7 अप्रैल 2022 को दिए आदेश में कहा कि मुसलमानों में रिकॉर्ड में जाति का उल्लेख नहीं करने की प्रथा को कानूनी तौर पर परखने का निर्णय तब लिया जब याचिकाकर्ता की ओर से दलील दी गई कि कुछ प्रासंगिक दस्तावेजों में याचिकाकर्ता के रिश्तेदारों की जाति का उल्लेख नहीं होने के कारण को जातीय जांच का आधार नहीं बनाना चाहिए था, क्योंकि बॉम्बे हाइकोर्ट के कई पूर्व फैसलों में कहा जा चुका था कि मुसलमानों में जाति का उल्लेख करने का प्रचलन नहीं है।

फरवरी 2021 और 22 दिसंबर 2020 के दो पूर्व फैसलों को बतौर उदाहरण पेश किया गया था, कि मुसलमानों के संबंध में यह तय कानूनी व्यवस्था है कि उनमें जाति प्रमाण-पत्रों में जाति का उल्लेख करने का प्रचलन नहीं है। फिलहाल इस मामले की सुनवाई मई 2022 में हुई होगी। यहां सवाल यह उठता है कि जब जाति ही सुनिश्चित नहीं तो जातिगत आरक्षण कैसे दिया जा सकता है?

आरक्षण की मौजूदा व्यवस्था में मुसलमानों को अनुसूचित जाति वर्ग में आरक्षण नहीं मिलता है। उन्हें अन्य पिछड़ा वर्ग (ओ.बी.सी.) में ही आरक्षण का लाभ मिलता है। दरअसल केंद्र की ओ.बी.सी. सूची में मुसलमान जैसा कोई शब्द दर्ज नहीं है। लेकिन बुनकर शब्द उल्लेखित है। बुनकरों में हिंदू और मुसलमान दोनों ही शामिल हैं। लिहाजा बुनकर मुस्लिम है तो उन्हें जाति प्रमाण-पत्र मिल जाता है। हालांकि अपवादस्वरुप मुसलमान जाति का जिक्र करते हैं। इनमें मोमिन और जुलाहा जैसे जाति समुदाय शामिल हैं, इन्हें ओ.बी.सी. का जातीय प्रमाण-पत्र मिल जाता है। लेकिन बड़ा विषय यही है कि यदि सरकारी रिकॉर्ड में जाति का उल्लेख नहीं है, तो फिर जातीय प्रमाण-पत्र कैसे मिल सकता है?

मुस्लिम धर्म के पैरोकार यह दुहाई देते हैं कि इस्लाम में जाति प्रथा की कोई गुंजाइश नहीं है। जानकारी के अनुसार मुसलमान भी चार श्रेणियों में विभाजित हैं। उच्च वर्ग में सैय्यद, शेख, पठान, अब्दुल्ला, मिर्जा, मुगल, अशरफ जातियां शुमार हैं। पिछड़े वर्ग में

- शेष पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक स्वध्याय

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अमर जीवन दर्शन का साप्ताहिक स्वाध्याय

“आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर उनके जीवन दर्शन का स्वाध्याय सभी आर्यजनों के लिए अत्यंत आवश्यक है। ऐसा सभा की अंतरंग बैठक में अधिकारियों ने निर्णय लिया है। इसके लिए आर्य संदेश के साप्ताहिक अंक में हम एक नियमित कॉलम के रूप में महर्षि दयानंद की जीवनी को क्रमश: प्रकाशित करने का पूरा प्रयास कर रहे हैं। सबसे अनोखे, अनूठे महर्षि का जीवन चरित्र यूं तो हमारे अनेकानेक महापुरुषों ने अपनी लेखनी से अद्भुत और अनुपम लिखा है, जिनमें पंडित लेखराम, स्वामी सत्यानंद, डॉ. रघुवंश, देवेंद्र मुखोपाध्याय, रामविलास शारदा, गोपाल राव, भवानी लाल भारतीय, पंडित लक्ष्मण आर्य उपदेशक और अन्य अनेक लेखक महापुरुषों के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त करते हुए यहां पर प्रस्तुत है- इंद्र विद्यावाचस्पति द्वारा लिखित महर्षि दयानंद का जीवन चरित्र, जिसको हम क्रमश: प्रकाशित कर रहे हैं। सभी पाठकों से अनुरोध है कि अपने स्वाध्याय के क्रम में महर्षि की जीवनी को शामिल करें और दूसरों को प्रेरित करें।”

क्रमशः गतांक से आगे

एक ब्राह्मण के बालक को जैसी प्रारम्भिक शिक्षा मिलनी चाहिए, वह मूलशंकर जी को प्राप्त होती रही। 14 वर्ष की आयु तक वें यजुर्वेद संहिता कण्ठस्थ कर चुके थे, व्याकरण में भी उसका प्रवेश हो गया था। इतना पढ़-लिख लेने पर मूलशंकर जी के गुरुओं ने यह सम्मति बनाई कि अब वें इस योग्य हो गये हैं कि कुल-क्रमागत धार्मिक कृत्यों में भी भाग लेने लगें। 1894 विक्रमी की माघ वदी 14 को शिवरात्रि का व्रत था। शायद ही कोई पुराने ढंग का हिन्दू घराना होगा, जहां यह व्रत न मनाया जाता हो। शिवरात्रि की रात को शिव का अर्चन होता है और त्याग करना पड़ता है। अन्न और नींद, दोनों का इकट्ठा ही त्याग अधिक पुण्यजनक समझा जाता है। अनुभवी लोग जानते हैं कि बालकों के लिए इन दोनों में से एक त्याग भी सम्भव नहीं है; फिर जब दोनों का यत्न किया जाय तो कैसा डरावना बन जाता है! मूलशंकर जी के सामने जब शिवरात्रि का व्रत रखने का प्रस्ताव किया गया, तब वह पहले राजी नहीं हुआ। कोई खास लाभ दिखाई दिये बिना कोई भी बालक भूख और नींद से लड़ने को तैयार नहीं होता। इन दो शत्रुओं से युद्ध करना तो जवानों और बूढ़ों के लिए भी दुष्कर है; मूलशंकर जी तो अभी 14 वर्ष के विद्यार्थी थे। माता ने बालक की अनिच्छा में दो-एक युक्तियां देकर सहायता की- लड़का अभी छोटा है, इसे दिन में चार बार खाने की आदत है, यह कैसे भूखा रहेगा रात को, यह अंधेरे से पहले ही सो जाता है, रातभर कैसे जागेगा? हम कल्पना कर सकते हैं कि माता ने प्रेमवश होकर ऐसी ही युक्तियां दी होंगी।

तब पिता ने बालक की कल्पना शक्ति को अपना सहायक बनाने का यत्न किया। शिव का माहात्म्य सुनाया, शिवरात्रि की पुराणों में गाई हुई महिमा बताई और स्वर्ग के सुन्दर दृश्य खींचकर कोमल प्रतिभा को उत्तेजित करने का यत्न किया। यत्न में सफलता हुई। मूलशंकर जी शिवरात्रि का व्रत रखने के लिए तैयार हो गये। नियत समय पर पुजारी और गृहस्थ लोग मन्दिर में पूजा आदि कार्यों में लग गए। मूलशंकर अपने पिता के साथ बैठे हुए सब कुछ देख और सुन रहे थे। उनका हृदय दिन में सुनी हुई कहानियों से पूर्ण था। विश्वास और श्रद्धा का अंकुर उत्पन्न हो गया था, आशा और सम्भावना से प्रेरित होकर वे व्रत का पूरा पुण्य लूटने के लिए तैयार होकर बैठे थे।

पूजन हो गया। पुजारी और गृहस्थ लोग जागरण के लिए बैठ गए। आँखें धीरे-धीरे मुंदने लगी, सिर झुकने लगे, लोग एक-दूसरे के कन्धे या छाती पर सिर धरकर लुढ़कने लगे। कुछ ही घण्टों में मन्दिर में सन्नाटा छा गया और जो लोग रातभर जगकर पुण्य लूटने का संकल्प किये बैठे थे, वे निद्रादेवी की सुखमय गोद का आनन्द लेने लगे। सब सो गए, केवल एक भक्त जागता रहा। वह भक्त बालक मूलशंकर था। उसकी दृष्टि बराबर शिवलिंग पर गड़ी हुई थी। वह उस अद्भुत शक्ति सम्पन्न देवता की ओर चावभरी नजर से देख रहा था। देखता क्या है कि मन्दिर में सन्नाटा पाकर चूहे बिलों से निकल आए हैं; मूर्ति के इर्द-गिर्द चावल आदि के जो दाने पड़े हैं उन्हें खा रहे हैं, और बीच-बीच में ऊपर भी चढ़ जाते हैं। मूलशंकर ने सोचा कि जो महादेव बड़े-बड़े दानवों के व्यतिक्रम को नहीं सह सकता और त्रिशूल लेकर उनका संहार करता है, वह इन मूसों को सिर पर चढ़ने से तो अवश्य रोकेगा। और कुछ नहीं तो सिर हिलाकर उन्हें भगा देगा, परन्तु उसने आश्चर्य और विस्मय से देखा कि वह पत्थर तो पत्थर ही रहा, हिला डुला तक नहीं। तब क्या यह पत्थर ही वह शिव है जो कैलास पर निवास करता है, जिसमें संसार का संहार करने की शक्ति है, जिसके त्रिशूल की ज्योति से दानवों के कलेजे कांप जाते हैं? नहीं, वह कोई और ही शिव होगा- इसमें और उसमें अवश्य भेद है। ये सब विचार मूलशंकर जी के तीव्र प्रतिभा से पूर्ण जिज्ञासु मन में उठने लगे। वे दिन में शिव-माहात्म्य सुन चुके थे। उन्हें वह सब याद आने लगा और जो कुछ देखा उसकी रोशनी में सुना हुआ माहात्म्य निर्मूल प्रतीत होने लगा।

-क्रमशः अगले अंक में...

स्वास्थ्य संदेश

एक्युप्रेशर से कान के रोगों का उपचार

कानों के रोग

हमारे शरीर में पांच ज्ञान इन्द्रिया हैं इनमें से कान हमारी महत्वपूर्ण ज्ञानेन्द्रियां हैं, जिनका कार्य ध्वनि का ज्ञान कराना या सुनने की क्रिया करना है। इसलिए कानों को श्रवणेन्द्रियों का नाम दिया गया है। आवाज का बोध कराने के अतिरिक्त कान मनुष्य की गति अर्थात् चाल को वश में रखने और शरीर की समतुल्यता जिसे साधारणत: संतुलन कह सकते हैं, बनाए रखने में सहायक होते हैं। यह कार्य आन्तरिक कान में स्थित अर्द्ध चक्राकार नलियां करती हैं। कान के तीन भाग हैं- (1) बाहरी कान (2) मध्य कान (3) आन्तरिक कान। ये तीनों भाग ठीक रूप से अपनी क्रिया करते हैं और हमें आवाज सुनायी देती है।

सुनने की क्रिया में प्रत्येक ध्वनि वायु में एक प्रकार का कंपन पैदा करती है। जो सूक्ष्म लहरों का रूप लेती है। वायु में फैली ध्वनि लहरें बाहरी कान में इकट्ठी होकर वहां से श्रवण नलिका (auditory canal) से गुजरती हुई कर्ण पटल से टकराती हैं। कानों के अन्दर कर्ण पटल तथा दूसरे संस्थानों

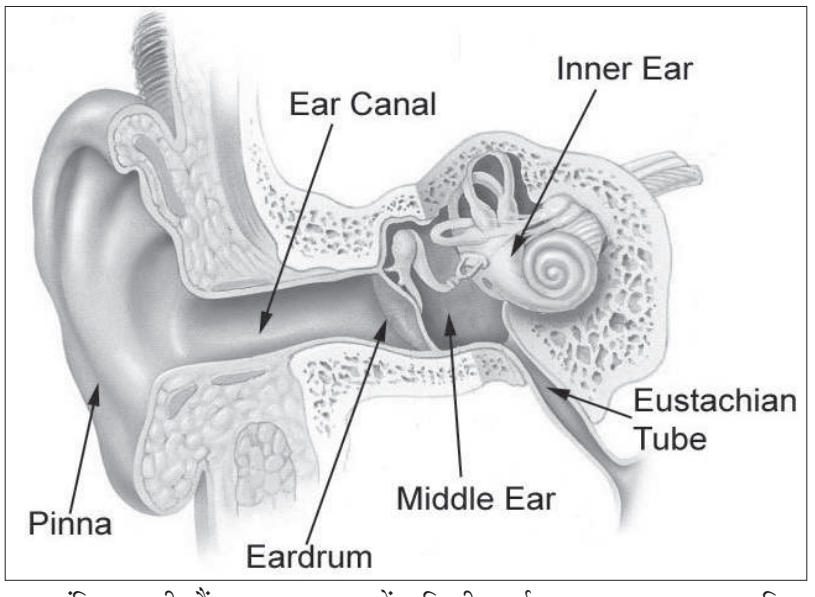

का कंपित करती हैं। इन सूक्ष्म लहरों की सूचना कान में स्थित तरल पदार्थ (endolymph) में तैरते हुए स्नायुओं के सिरों को मिलती है। इस क्रिया द्वारा ध्वनि का बोध दिमाग के श्रवण प्वाइंट में पहुंचता है। इससे हमें आवाज का वास्तविक बोध होता है।

कानों के विभिन्न रोग

कानों का प्रमुख रोग बहरापन है। यह जन्म से भी हो सकता है और किसी दुर्घटनावश या बहुत अधिक आवाज यथा बहुत जोर का धमाका सुनने से भी हो सकता है। चेचक और खसरा होने के पश्चात् प्राय: कानों से पीव बहने लगती है। पीव सफेद या पीले किसी भी रंग की हो सकती है। अगर इसका तुरन्त इलाज न किया जाए तो कान बहरे हो सकते हैं। यह रोग बच्चों में प्राय अधिक होता है। ऐसा भी देखा गया है कि जो व्यक्ति किसी अन्य रोग के निवारण के लिए कुनैन या कई अन्य शीघ्र प्रभावकारी तेज औषधियों का अधिक मात्रा में प्रयोग कर लेते हैं, उनमें भी बहरेपन के लक्षण शुरू हो जाते हैं। उनके कानों में कई तरह की आवाजें (tinnitus) तथा शाएं-शाएं, बादल गर्जना, घंटियां तथा सीटियां बजना और मधुमक्खियों की भिनभिनाहट जैसी ध्वनि गूंजने लगती है। वास्तव में बाहर से ऐसी कोई आवाज नहीं आती। अधिक स्वप्नदोष और अधिक मात्रा में वीर्यपात तथा दिमाग की कमजोरी के कारण भी बहरापन होने लगता है।

कानों का गुर्दा के रोगों से गहरा संबंध है। गुर्दों के विकारों के कारण प्राय: बहरापन, कानों में दर्द तथा कानों में शाएं-शाएं की आवाजें शुरू हो जाती है। अत: कानों के रोगों में गुर्दों से संबंधित प्वाइंट्स पर भी प्रेशर देना चाहिए ताकि गुर्दों का कोई रोग हो तो वह भी ठीक हो जाए।

पेट में अफारा, पुरानी कब्ज तथा उच्च रक्तचाप के कारण भी कानों में भिनभिनाहट शुरू होती है।

-क्रमशः अगले अंक में...

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती कविताओं की रचना करें और पुरुस्कार पाएं

दयानंद भगवान को सहस्त्रो प्रणाम है– कवि अखिलेस मिश्र

छप्पय (1)

जिन, तृन सम तजि भोग, जनम भरि जोगहिं धारयो।
मेटि अवैदिक-कर्म, धर्म-वैदिक बिस्तारयो।।
ब्रह्मचर्य-व्रत पालि, प्रबल-पाखण्ड पछारयो।
सुद्ध-सत्यजुग थापि, देस मँह ग्यान पसार्यो।।
अखिलेस, अछूत-समाज के, सुचि-श्रीखण्ड-ललाम हैं।
उन दयानन्द भगवान को, सादर प्रनाम हैं।।

शब्दार्थः– तृन-तिनका। श्रीखण्ड-चन्दन

भावार्थः– मैं उन दयानन्द भगवान को आदर पूर्वक सहस्त्रों प्रणाम करता हूं जिन्होंने तृण के समान समस्त भोगों का परित्याग करके जन्म भर योग धारण किया; अवैदिक कर्मों को मिट कर वैदिक धर्म का विस्तार किया। ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करके जबर्दस्त पाखण्ड को पछाड़ दिया और शुद्ध सत्ययुग की स्थापना करके भारतवर्ष में ज्ञान फैलाया। अखिलेश कवि कहते हैं, जो अछूत समाज के लिए सुन्दर पवित्र चन्दन के समान हैं।

(2)

जिन दुख सहि बहु उँच, नीच को भेद मिटायो।
ओम-धुजा फहराय, वेद-मारग अपनायो।।
कठिन, कुरीति नसाय, जाति में ओज जगायो।
सुलभ, सुपन्थ सुझाय, विश्व को आर्य बनायो।।
अखिलेस अनाथ-समाज के, दयानन्द के धाम हैं।
उन दयानन्द रिखिराज को, सादर सहस प्रनाम हैं।।

शब्दार्थः– ओज-उत्साह। दयानन्द-दया और आनन्द

भावार्थः– मैं उन ऋषिवर दयानन्द को सादर सहस्त्रों प्रणाम करता हूं जिन्होंने अनेक कष्ट सहकर ऊंच-नीच का भेद मिटा दिया; ओ३म् ध्वजा फहराकर वेद मार्ग का अनुसरण किया। कठिन कुरीतियों का नाश करके हिन्दू जाति में स्फूर्ति पैदा की और संसार को सीधा तथा सुलभ मार्ग दिखलाकर आर्य बना दिया। अखिलेश कवि कहते हैं, जो अनाथों के लिए दया और आनन्द के घर हैं।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के अवसर पर आर्य संदेश के सभी आयु वर्ग के पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद जी के जीवन पर विभिन्न घटना क्रमों पर आधारित कविता की रचना करके संपादक, आर्य संदेश, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली 110001, पर भेजें अथवा Email-aryasandeshdelhi@gmail.com करें। आपकी स्तरीय कविता को आर्य संदेश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाएगा और विशेष अवसर पर आपको पुरुस्कृत भी किया जाएगा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित स्वास्थ्य जागरूकता सेवा अभियान

विभिन्न सेवा बस्तियों में लाभ प्राप्त कर रहे हैं– प्रतिदिन रोगीजन

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं की नियंत्रक शिरोमणि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा राष्ट्र सेवा एवं मानव निर्माण के सैकड़ों प्रकल्प गतिशील हैं। सभा द्वारा संचालित सेवा समर्पण के इस अनुक्रम में नील फाउंडेशन के सहयोग से चल रहे स्वास्थ्य जागरूकता सेवा से प्रतिदिन सैकड़ों गरीब लोग लाभ प्राप्त कर रहे हैं। इस महत्वपूर्ण योजना का उद्देश्य है कि दिल्ली की उन समस्त सेवा बस्तियों में जहां निर्धन, मजदूर लोग रहते हैं, जहां पर छोटे छोटे झुग्गी झोपड़ी हैं, साफ सफाई भी नाम मात्र के लिए ही है, राजनीतिक पार्टियां जहां केवल चुनाव के समय पर वोट मांगने के लिए ही जाती हैं, बाकी समय उन भोले भाले लोगों को यदा कदा भीड़ के रूप में ही वे प्रयोग करते हैं, उनके सुख, दु:ख, पीड़ा, संताप से उनका कोई सरोकार नहीं होता। ऐसे गरीब दिहाड़ी मजदूर लोगों के कल्याण के लिए आर्य समाज आगे आया है। लगभग प्रतिदिन सभा की एंबुलेंस और पूरी स्वास्थ्य जागरूकता सेवा की टीम दिल्ली में जगह जगह पर झुग्गी बस्तियों में नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच करती है, जिसमें सुगर, बी.पी., हीमोग्लोबिन, आक्सीजन, पल्स, वजन, लम्बाई की जांच कर तुरंत रिपोर्ट दी जाती है। यह सेवा कार्य चल रहा है और प्रतिदिन झुग्गी बस्तियों में स्वास्थ्य परीक्षण किया जा रहा है।

झुग्गी–झोपड़ियों में निर्धन रोगियों की नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच करते हुए सभा के स्वास्थ्य कर्मी

वस्तुत: आधुनिक परिवेश में उत्तम स्वास्थ्य अपने आप में एक बड़ी चुनौती है। उस पर भी भारत की राजधानी दिल्ली का प्रदूषित वातावरण, झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले निर्धन मजदूरों जो रोज कमाते और खाते हैं, जहां हवा, पानी, भोजन आदि सब बहुत कम स्वच्छ होता है। ऐसे में वहां पर बीमार लोग अपनी दिहाड़ी मजदूरी से छुट्टी न मिलने के कारण बिना स्वास्थ्य परीक्षण के लक्षणों के आधार पर दवाई खाकर ज्यादा बीमार हो जाते हैं। इन सभी समस्याओं और पीड़ाओं को ध्यान में रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली की समस्त सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य जागरूकता सेवा अभिमान के माध्यम से सभा की एम्बुलेंस और स्वास्थ्य जागरूकता की पूरी टीम जगह जगह स्वास्थ्य परीक्षण का कार्य कर रही है। जिससे निर्धन रोगियों की बीमारी की सही जांच और उपचार संभव हो सके। इस सेवा कार्य में सभा को लगातार सफलता प्राप्त हो रही है।

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू काश्मीर द्वारा प्रांतीय आर्यवीर दल शिविर संपन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू काश्मीर और आर्यवीर दल जम्मू के तत्वावधान में 7 दिवसीय प्रांतीय शिविर का दिनांक 25 जून से 2 जुलाई 2023 तक वानप्रस्थ आश्रम उधमपुर में संपन्न हुआ। दिल्ली सभा एवं आर्यवीर दल से भेजे गए आचार्य दिनेश और करण आर्य ने बच्चों को प्रशिक्षण दिया। शिविर का भव्य दीक्षांत एवं समापन समारोह 2 जुलाई को आयोजित किया गया। ध्वजारोहण माननीय महात्मा चुन्नीलाल जी के कर कमलों द्वारा किया गया और कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप उधमपुर जिले के एस.एस.पी. पवन कुमार जी उपस्थित रहे। भव्य व्यायाम प्रदर्शन के अंतर्गत विभिन्न कलाओं को दिखाया गया जिसमें उपस्थित सैकड़ों की संख्या में लोगों ने तालियां बजाकर के बच्चों को उत्साहित किया। जिले के एस.एस.पी. द्वारा बच्चों को श्रेष्ठ विचारों को मन में धारण कर जीवन को उन्नत बनाने की प्रेरणा दी। शिविर के सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार को अर्णव आर्य सुपुत्र श्री रोशनलाल शास्त्री जी ने प्राप्त किया। इसके साथ ही 20 आर्यवीरों ने जम्मू क्षेत्र में क्षेत्रीय बच्चों की आर्यवीर दल की शाखा संचालित करने का संकल्प भी लिया। इस कार्यक्रम में माननीय अरुण चौधरी जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा का विशेष आशीर्वाद प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में अरुण कुमार प्रधान, आर्य समाज पुरानी मंडी, राजीव सेठी जी मंत्री, पुरानी मंडी, अक्षय आर्य संचालक, अभिषेक आर्य, राहुल आर्य आदि उपस्थित रहे।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के अयोजनों की श्रृंखला

आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी द्वारा चार दिवसीय वेद प्रचार हेतु

फिजी पहुंचे सभा महामंत्री विनय आर्य ने किया शिक्षण संस्थाओं का अवलोकन

आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी द्वारा आयोजित चार दिवसीय वेद प्रचार के मध्य 4 जून 2023 को फिजी सभा द्वारा संचालित विभिन्न शिक्षण संस्थाओं का अवलोकन करते हुए सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी, ज्ञात हो कि वहां सभा द्वारा एक बड़ी यूनिवर्सिटी भी चल रही है, जिसके नवनिर्मित तीसरे कैंपस का 9 जुलाई को उदघाटन होगा।

जैसा की सर्वविदित ही है कि संपूर्ण विश्व में आर्य समाज एक ऐसा अनोखा और अनूठा विश्व व्यापक संगठन है। इसकी सेवा इकाई जहां पर, जिस भी देश में है वहीं पर मानव निर्माण एवं सेवा साधना के कल्याण कारी कार्यों के प्रति समर्पित है। क्योंकि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी की यही प्रेरणा है कि आर्यजन जहां पर भी रहें वहीं पर वैदिक विचारधारा का प्रचार-प्रसार और विस्तार करते हुए अज्ञान, अविद्या और अंधकार को दूर भगाते रहें, वैदिक धर्म संस्कृति और संस्कारों को पूरे संसार में फैलाते रहें।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी महाराज की शिक्षाओं को शिरोधार्य करके आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी द्वारा वहां पर अनेक सेवा कार्य लगातार संपादित हो रहे हैं। लेकिन शिक्षा सेवा में फिजी सभा का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। ज्ञात हो कि फिजी सभा के अनुरोध पर 3 जुलाई से 6 जुलाई तक वेद प्रचार के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी फिजी पहुंचे हैं। इस दौरान उन्होंने 4 जुलाई को सभा द्वारा संचालित शैक्षणिक संस्थानों का अवलोकन किया और अपना प्रशंसनीय अनुभव बताते हुए इस मानव-निर्माण के अभियान हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर सभी अधिकारियों और कार्यकर्ताओं को बधाई दी।

आपने बताया कि फिजी में आर्य समाज द्वारा जहां एक तरफ कई महत्वपूर्ण शिक्षण संस्थान चल रहे हैं, वहीं विशेष रूप से एक यूनिवर्सिटी भी सभा द्वारा संचालित है। फिजी में प्रसिद्ध इस यूनिवर्सिटी के वर्तमान दो कैंपस गतिशील हैं, लेकिन महर्षि दयानंद सरस्वती जी महाराज की 200वीं जयंती के दो वर्षीय आयोजनों के मध्य 9 जुलाई 2023, रविवार को तीसरे कैंपस का उद्घाटन समारोह पूर्वक किया जाएगा। इस अवसर फिजी के सम्मानित अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहेंगे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य संदेश परिवार की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी को हार्दिक बधाई।

-संपादक

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य प्रतिनिधि सभा आस्ट्रेलिया के तत्वावधान में

सिडनी, ब्रिसबेन आदि विभिन्न स्थानों पर वेद प्रचार कार्यक्रम संपन्न

के दिव्य संदेश उपदेशों के माध्यम से प्रचारित हो रहे हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा ऑस्ट्रेलिया के विशेष अनुरोध पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी 21 जून 2023 को ऑस्ट्रेलिया एयरपोर्ट पर पहुंचे तो वहां के सभी अधिकारी महानुभावों ने उनका हार्दिक स्वागत किया और इसके साथ ही श्री विनय आर्य जी ने सभी महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त किया। इसके उपरांत आर्य समाज, सिडनी, आस्ट्रेलिया के प्रांगण में लगातार प्रतिदिन सामूहिक यज्ञ, भजन, और वेद प्रवचनों के कार्यक्रम सफलता पूर्वक संपन्न हुए। इसके बाद 30 जून से 2 जुलाई तक क्वींसलैंड के ब्रिसबेन में वेद प्रचार कार्यक्रम सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। जिसमें हर आयु वर्ग के आर्यजन उपस्थित रहे। श्री वॉरेन एरिक, एम.पी. भी उपस्थित रहे और उन्होंने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उरोक्त वेद प्रचार के विभिन्न सत्रों में श्री विनय आर्य जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं, आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास और वर्तमान में आर्य समाज की विश्व स्तर पर भूमिका के साथ-साथ वेदादि शास्त्रों को आधार बनाकर प्रेरक वक्तव्य दिए। वैदिक धर्म की सरल, सहज व्याख्या करते हुए आपने उपस्थित आर्यजनों को अपने उद्बोधन में कहा कि धर्म का एक अर्थ कर्तव्य पालन भी है, अगर मनुष्य अपने कर्तव्य का पालन पूरी निष्ठा के साथ करता है तो समझो कि वह धर्म का पालन ही कर रहा है। वैदिक धर्म उतना ही प्राचीन है जितना की मानव जीवन। वर्तमान में अनेक मत, मजहब, पंथ, संप्रदाय चल रहे हैं लेकिन वेदों

के अनुसार जीवन जीना, अपनी दैनिक चर्या और अनुशासित, व्यवस्थित होकर जीवन के लक्ष्य और उद्देश्य को प्राप्त करना, मानव सेवा और परोपकार के लिए प्रयासरत रहना, यह मानव का धर्म अर्थात कर्तव्य है। अत: प्रत्येक व्यक्ति को सदैव सजग होकर के अपना कार्य करना चाहिए, आपने वेद प्रवचनों के इस क्रम में मानव जीवन के उद्देश्य की व्याख्या करते हुए जहां धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को लक्ष्य बताया, वहीं आनंद की प्राप्ति के लिए मनुष्य का जीवन विशेष रूप से प्राप्त होता है का संदेश दिया। जीवन में अगर मनुष्य अशांत है, दुखी है, परेशान है तो उसके कारणों पर मनुष्य को स्वयं विचार करना चाहिए, क्योंकि परमात्मा तो सभी को आनंद की प्राप्ति के लिए ही मानव जीवन प्रदान करता है, इसके लिए मनुष्य को अपने मन, वचन और कर्म पर ध्यान देना चाहिए, अगर कहीं पर कोई गलती हो रही तो उसका सुधार करना चाहिए, परमात्मा के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त करना चाहिए, मानव सेवा और परोपकार में अपने मन को समर्पित करना चाहिए, तभी जीवन में आनंद की प्राप्ति होगी। इस तरह श्री विनय आर्य जी ने अपने प्रवचनों में अत्यंत सरल, सहज भाषा, भाव, शैली का प्रयोग किया जो सभी आर्यजनों को सरलता से समझ में आया और सभी ने उनके उद्बोधन के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त किया।

श्री विनय आर्य जी ने वहां के सभी अधिकारियों और कार्यकर्ताओं को वैदिक साहित्य भी वितरित किया। सभी ने मिलकर सामूहिक ऋषि लंगर का भी आनंद लिया। श्री विनय आर्य जी ने आस्ट्रेलिया के अधिकारी, आर्यजनों के विषय में जानकारी देते हुए बताया कि जहां आप महर्षि दयानंद सरस्वती जी और आर्य समाज के प्रति समर्पित महान विभूति हैं वहीं बहुत ही प्रेम सौहार्द से परिपूर्ण व्यक्तित्व के धनी हैं। चाहे अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के भव्य आयोजन हों या आर्य समाज के कोई भी सेवाकार्य, प्रत्येक क्षेत्र में आर्य समाज आस्ट्रेलिया के योगदान का अपना स्थान और अपनी पहचान है। आप सबका प्रेम सौहार्द पूर्ण आचरण और व्यवहार आदर्श और श्रेष्ठ है। आर्य प्रतिनिधि सभा आस्ट्रेलिया के अधिकारियों ने श्री विनय आर्य जी का आस्ट्रेलिया पधारने पर धन्यवाद किया। इसके बाद विनय आर्य जी सभी का आभार व्यक्त करते हुए फिजी में वेद प्रचार करने के लिए प्रस्थान कर गए।

-संपादक

Vedic Cosmogony in Nutshell

Continuing the last issue

Man is apparently the last corner on this earth when everything is supposed be at flush, enabling him, as the highest and rational being, to have full and natural enjoyment of the bounties of nature, to develop fully in every walk of life, to have the full conquest of nature to his advantage and to develop spiritually to secure his emancipation from the -bondage of recurring births and deaths towards enjoyment of the bliss of salvation.

The Vedas state pointedly about the first creation of mankind and subsequent and recurring procreations through the faculties of generation or Pran and conception or Rayi.

The Vedas also state univocally that, in the beginning of things, three Kinds of people, viz., (i) the Devas or the clever and brilliant in arts and crafts, (ii) the Rishis or the thoughtful and (iii) the Sadhyas, Siddhas or the tough, are created. The modern ethnologists and anthropologists, also, speak of the three primary races of the world : (i) the Mongoloids or the yellow people of the Far East, inhabiting Asiatic Russia, Mongolia, China, Japan and Sur and Further India, (ii) the Caucasians, the Aryans or the Indo-Europeans and (iii) the Negroids or the tough-skinned, spread all over Africa and neighbouring places.

The Mongoloids are very soft. Their flesh and skin offer no resistance to the internal secretions percolating out through the skin pores, ending into formation of straight hair. Their temples, upper eyelids and upper lips are prominent and their skin is yellow to yellowish Their hair are long and straight, hanging loose like string, and round in cross-section. Apart from the yellow race countries, mentioned just above, this ethnic group is also found in some South American, Central American and North American counties as their autochthons having more or less the same features.

Th Negroids' flesh and skin are pretty tough offering natural resistance to the passiug out of the internal secretions through the skin pores, which end into formation of twisted hair They can stand all rigours of extreme climates. The lower portions of their cheeks, lower lips and eyeballs are very prominent. Their skin is dark to darkish. Their hair are twisted and wooly, arranged like in small interlocked spirals, and flat in cross-section. Some of them like the Polynesians, the Malasians, the Indonesians, etc., have shaggy hair, semifiat in cross-section. The bulk of the people, belonging to the Negroid group live in Africa.

The Caucasians, the Aryans or the Indo-Aryans are in between the Mongoloids and the Negroids in their facial and bodily features. Their flesh and skin are neither soft like those of the Mongoloids nor tough like those of the Negroids. Their hair are neither straight nor twisted, wooly or shaggy, but wavy and oval in cross-section. Their temples, cheeks, eyelids, eyeballs, lips, etc., are symmetrical. The colour of their skin is white, brown, darkbrown and even blackish. They mostly live in Europe and Asia, the two axis ends of theirs being Hamburg in Germany and Calcutta in Bharat or India.

These Aryans or Indo-Aryans have, in fact, been custodians of all knowledge and preservers of human culture and civilisation. The Indians in particular have been responsible for preserving the Vedas, the Divine gift to humanity at large providing all relevant informations on what is essentially knowable and chartering the human conduct and behaviour in keeping with the Divine plan of things.

After creating mankind, God, in His natural dispensation of things, gives them the Vedic knowledge through the process of inspiration in the innerselves of the most advanced of them. The Veda, the earliest literature in the library of mankind, speaks of one Vedic message, consisting of four parts or the four Vedas—the Rigved, the Yajurved, the Samaved and the Atharvaved—and states definitely that the Veda is of the Divine origin. The Brahman literature of India states that the four Vedas, as enumerated above, were revealed to the four sages Agni, Vayu, Aditya and Angira.

Man is not instictive but rational. This, in fact, is the Divinity made point of distinction between man and other creatures. The European theorists until recently held that mankind made human speeches by consensus of opinion after the imitation of various sounds in nature. Prof. Maxmuller sucessfully washed out such way of thinking in his Science of Language and. the allied writings. As a matter ot fact, some human children, kept away from the human society and brought up in seclusion in France and India, learnt nothing of the human speech and other human activities.

To be continued in next issue

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद

वर्ण के भेद-आश्रम-आश्रम के भेद

44-वर्ण के भेद

ब्राह्मण, श्रत्रिय, वैश्य
जो शूद्रादिक हैं चार ।
'वर्णों के ये भेद' हैं
विधि आज्ञा अनुसार ।।56।।

45-आश्रम

जिसमें अतिश्रम से सभी
उत्तम गुण लें धार ।
श्रेष्ठाचार विचार से वे
'आश्रम' हैं चार ।।57।।

46-आश्रम के भेद

सद्विद्या गुण ग्रहण से
लेवे इन्द्रिय जीत ।
'आत्म-काय-बल-वृद्धि'
ही ब्रह्मचर्य की रीति ।।58।।
प्रजा-जनन विद्यादि से
व्यवहारों का मूल ।
वही 'ग्रहाश्रम' जानिए
शास्त्रों के अनुकूल ।।59।।

साभार :
सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

प्रेरक प्रसंग

एक वे दिन थे

लौहपुरुष सरदार पटेल को धमकी भरे पत्र मिलने लगे। मुस्लिम लीगी गुण्डे उन्हें जान से मारना चाहते थे। गुरुकुल कांगड़ी के कुछ ब्रह्मचारियों ने उन्हें पत्र लिखकर उनकी रक्षा के लिए अपनी सेवाएं भेंट कीं। सरदार पटेल ने ऋषि के शब्दों को उद्धृत करते हुए उन आर्यवीरों का धन्यवाद किया। उन्होंने ब्रह्मचारियों को लिखा, ''प्रभु की इच्छा ही पूर्ण होगी, मृत्यु से मैं डरता नहीं।''

आये दिन आर्यजाति के निर्दोष लाल मारे जा रहे हैं। गुरुकुलों के ब्रह्मचारी अब कहां हैं? वे दिन फिर लौट सकते हैं। सोया तप-तेज फिर जगाना होगा।

लाला लाजपत राय के निष्कासन के दिनों की बात है। स्वामी श्रद्धानन्दजी ने (तब महात्मा मुंशीराम थे) एक ऐतिहासिक भाषण दिया था। उसकी चर्चा उनके कई जीवन-चरित्रों में है, परन्तु पूरा भाषण सम्भवत: किसी ने नहीं दिया। सौभाग्य से मुझे यह ऐतिहासिक भाषण मिल गया है। भाषण क्या है, सिंह की दहाड़ व हुँकार है।

उसी ऐतिहासिक भाषण में स्वामीजी ने एक घटना सरकार के दमनचक्र की दी है। हरियाणा के एक ग्राम में डिप्टी कमिश्नर साहब गए। आसपास के नम्बरदारों, जेलदारों को बुलवाया गया। अंग्रेज साहब के बुलावे पर सब आ गये। साहब ने विशेष बात यह कही कि देखों, अपने-अपने ग्रामों में आर्यसमाज को घुसने न देना। यदि कहीं कोई आर्यसमाजी है तो उसे ग्राम से निकाल दो। साहब को यह पता न था कि जिन चौधरियों से वह बात कर रहा था, उनमें अधिकांश आर्यसमाजी थे।

सूझबूझ वाले एक चौधरी ने बड़ी नीतिमत्ता से कहा कि यदि हम किसी

आर्यों को निकाल दो

को ग्राम से निकालेंगे तो आपकी सरकार हमें ही दबाएगी। इसलिए साहब बहादुर आप ही इन आर्यों को हमारे यहाँ से निकालें। इस पर साहब बोले, ''नहीं, हम तो इन्हें नहीं निकाल सकते। आप निकालें, हम आपको कुछ न कहेंगे।''

इस पर वह आर्य चौधरी बोला- ''साहब जिन आर्यसमाजियों पर हाथ डालते हुए आपकी सरकार डरती है, हम उन्हें कैसे निकाल दें।'' यह था आर्यसमाज का तेज। खेद है कि स्वामी श्रद्धानन्दजी ने उन चौधरियों का नाम वहां नहीं दिया। स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी उनके नाम बताया करते थे, हमें उनमें से केवल चौधरी जुगलाल का नाम ही याद है। शेष नाम स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी के लेखों में खोजने पड़ेंगे। आर्यो! आओ, प्रभु की वाणी वेद की विमल रचनाओं को सुनें व सुनावें और उस अतीत को फिर वर्त्तमान कर दें।

-प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

पृष्ठ 2 का शेष

कुंजड़ा, जुलाहा, धुनिया, दर्जी, रंगरेज, डफाली, नाई, पमारिया आदि शामिल हैं। पठारी क्षेत्रों में रहने वाले मुस्लिम आदिवासी जनजातियों की श्रेणी में आते हैं। अनुसूचित जातियों के समतुल्य धोबी, नट, बंजारा, बक्खो, हलालखोर, कलंदर, मदारी, डोम, मेहतर, मोची, पासी, खटीक, जोगी, फकीर आदि हैं।

मुस्लिमों में ये ऐसी प्रमुख जातियां हैं जो पूरे देश में लगभग इन्हीं नामों से जानी जाती हैं। इसके अलावा देश के राज्यों में ऐसी कई जातियां हैं जो क्षेत्रीयता के दायरे में हैं। जैसे बंगाल में मण्डल, विश्वास, चौधरी, राएन, हलदार, सिकदर आदि। यही जातियां बंगाल में मुस्लिमों में बहुसंख्यक हैं। इसी तरह दक्षिण भारत में मरक्का, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर आदि में विभिन्न उपजातियों के क्षेत्रीय मुसलमान हैं। राजस्थान में सरहदी, फीलवान, बक्सेवाले आदि हैं। गुजरात में संगतराश, छीपा जैसी अनेक नामों से जानी जाने वाली बिरादरियां हैं। जम्मू-कश्मीर में ढोलकवाल, गुडवाल, बकरवाल, गोरखन, वेदा (मून) मरासी, डुबडुबा, हैंगी आदि जातियां हैं। इसी प्रकार पंजाब में राइनों और खटीकों की भरमार है। अभी पिछले दिनों मध्य प्रदेश के भोपाल में 27 जून को एक कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी जी ने जब पसमांदा मुसलमानों को लेकर कहा कि भारत के मुस्लिम भाई और बहनें संघर्षपूर्ण जीवन जीते हैं। उनकी कोई नहीं सुनता उनके साथ इतना भेदभाव किया गया, लेकिन इस पर कोई बहस नहीं हुई। आज भी पसमांदा मुसलमानों को बराबर का हिस्सा नहीं दिया जाता। उन्हें अछूत समझा जाता है, इस पर कई विपक्षी राजनीतिक दलों ने प्रधानमंत्री को मुस्लिम समुदाय को बांटने का आरोप लगाया।

जबकि जनता दल (यूनाइटेड) के पूर्व सांसद और ऑल इंडिया पसमांदा मुस्लिम समाज के प्रमुख अली अनवर अंसारी ने इन्हें समान दर्जा देने के लिए एक आंदोलन की शुरुआत भी की थी, जिनकी गिनती आमतौर पर पिछड़ा वर्ग या दलित मुस्लिमों में की जाती है, 2006 की सच्चर समिति की रिपोर्ट ने भारत में मुस्लिम सामाजिक संरचना की गहराई से समझाने के लिए मुसलमानों को तीन समूहों में बांटा था।

अशरफ: इसमें संभ्रांत मुसलमानों को शामिल किया गया, जो मध्य पूर्व से जुड़े होने का दावा करते हैं। इसमें सैय्यद, शेख और पठान आते हैं। अजलाफ: इसमें पिछड़े मुस्लिम या मध्यवर्गीय धर्मान्तरित (राजपूत, त्यागी मुस्लिम, जाट मुस्लिम, गुज्जर मुस्लिम) आते हैं और अरजल: इस कैटेगरी में दलित मुस्लिम जैसे दर्जी, इदरीस, मोमिन, कुरैशी, सैफी को शामिल किया गया था। दरअसल अजलाफ और अरजल से मिलकर पसमांदा मुस्लिम वर्ग तैयार हुआ है। वे भारत में कुल मुस्लिम आबादी का 85% हैं। इनको श्रेणियों में बांटने का तरीका धार्मिक पहचान के बजाय जाति और सामाजिक, आर्थिक पिछड़ेपन और मौजूदा आरक्षण श्रेणी के पुनर्गठन पर फोकस है।

मुस्लिमों के पसमांदा समाज के अध्यक्ष आतिफ रशीद ने भी मीडिया के सामने आकर कहा, पीएम मोदी ने मुसलमानों के साथ 800 साल से हो रहे भेदभाव को आवाज दी है। लोगों ने पसमांदा मुसलमानों के लिए बोलने पर फतवा जारी कर दिया था। पसमांदा मुसलमानों का मुद्दा उठाकर पीएम मोदी ने दुनिया को दिखा दिया है कि वह 140 करोड़ भारतीयों के नेता हैं। यह बयान अब हमें आर्थिक और राजनीतिक रूप से, साथ ही शिक्षा के मामले में भी ऊपर उठाएगा।

समाज सुधार की कल्याणकारी भावना के अनुरूप आर्य समाज चाहता है कि भारत में एक वर्ग विशेष जो अपने संप्रदाय में एक जुटता और समानता का दावा करते हुए यह कहता हुआ कभी नहीं थकता की हमारे मत में जातिवाद नहीं है, हम ऊंच-नीच और भेद-भाव नहीं मानते। जबकि उनके यहां हिंदुओं से भी ज्यादा कट्टर जातिवाद है। आर्य संदेश के पाठकों को यह ज्ञात ही होगा कि हम इस गंभीर विषय पर इससे पूर्व भी संपादकीय लिख चुके हैं, जिसमें प्रमाण सहित उदाहरण देकर यह सिद्ध किया गया था कि मुस्लिम समुदाय में जातिवाद पूरे चरम पर है और इस सामाजिक कुरीति से वहां भी लोग दुखी और परेशान हैं।

आर्य समाज चाहता है कि प्रत्येक मनुष्य मनुष्य बने, ईश्वर की अमृतवाणी वेद का अनुसरण करें। संपूर्ण भारत और विश्व में सुख शांति और प्रेम सौहार्द का वातावरण कायम हो। संपूर्ण मानव जाति उन्नति, प्रगति और सफलता के पथ पर आगे बढ़े। इसके लिए आर्य समाज द्वारा अपने बिछड़े हुए भाईयों को भी पूरे नियम और कानून की पालना करते हुए घर वापसी कराने के लिए महान स्वतंत्रता सेनानी, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी ने भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना की थी जो लगातार अपना कार्य कर रही है।

-संपादक

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

इस स्तम्भ में उन महानुभावों का परिचय प्रकाशित किया जा रहा है जो किसी की प्रेरणा/ विचारधारा से आर्य समाजी बनें हों। यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ लिखें अपने आर्यसमाजी बनने की कहानी और भेज दें aryasabha@yahoo.com पर ईमेलं। आप हमें अपनी कहानी और फोटो डाक द्वारा भी भेज सकते हैं। हमारा पता है- **सम्पादक, आर्य सन्देश साप्ताहिक, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001**

महर्षि दयानन्द उवाच
परोपकारी एवं प्रेरक शिक्षाएं

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रमुख रचना सत्यार्थ प्रकाश से लेकर उनकी जीवनी, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कारविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्य रत्नमाला, सवमंतव्यामंतव्य प्रकाश, उपदेश मंजरी आदि अनेक ग्रंथों से चयनित परोपकारी और प्रेरक शिक्षाएं आर्य संदेश के नियत नियमित कॉलम में महर्षि दयानंद उवाच के नाम से प्रकाशित की जा रही हैं। सभी पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद सरस्वती की इन जनकल्याण कारी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सभी आप इनका सोशल मीडिया पर प्रचार-प्रसार करें और महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास करें...

अतिथिः– जो पूर्ण विद्वान, परोपकारी, जितेन्द्रिय, धार्मिक, सत्यवादी, छल-कपटरहित, नित्य भ्रमण करने वाले मनुष्य होते हैं। उनको अतिथि कहते हैं। **(पंचमहायज्ञविधि पृ. 61)**

अतिथि क्यों? जिसकी आने और जाने में कोई भी निश्चित तिथि न हो तथा जो विद्वान होकर सर्वत्र भ्रमण करके प्रश्नोत्तरों के उपदेश से सब जीवों का उपकार करता है, उसको अतिथि कहते हैं।

(आर्योद्देश्यरत्नमाला पृष्ठ 7)

अर्थः- वह है कि जो धर्म ही से प्राप्त किया जाय और जो अधर्म से सिद्ध होता है उसको अनर्थ कहते हैं।

(स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश, पृ. 13)

अधिक एकान्त उचित नहीं:– नित्य प्रति एकान्त में ही रहना अच्छा नहीं है, क्योंकि मुख्य कर एकान्त में रहने से भी ज्ञान नहीं होता। सत्संग से ही ज्ञान प्राप्त होता है।

[पूना प्रवचन (उपदेश मं.) पृ. 74]

अन्तरात्मा का आदेशः– ''बलदेव ! कुछ भी चिन्ता न कीजिए। योगीजनों का यह दृढ़ विश्वास है कि अविद्या की तमो राशी को सत्य का सूर्य, अकेला ही तुरन्त जीत लेता है। जो मनुष्य पक्षपात का परित्याग करके केवल लोकहित के लिए ईश्वर की आज्ञानुसार सत्योपदेश करता है उसे भय कहाँ है?''

सत्पुरुष किसी से भयभीत होकर सत्य को नहीं छुपाया करते। जीवन जाय तो जाय, परन्तु वे अन्तरात्मा के आदेश सत्य को नहीं छोड़ते। एक मैं आत्मा हूँ एक परमात्मा है और एक ही धर्म है। दूसरा है कौन, जिससे डरें और कांपे।

(श्रीमद्दयानन्द प्रकाश पृ. 514)

आर्य सन्देश

क्या आपको डाक प्राप्त करने में कोई असुविधा हो रही है?

क्या आपको आर्य सन्देश नियमित प्राप्त नहीं हो रहा?

क्या आप आर्य सन्देश साप्ताहिक को ऑनलाइन पढ़ना चाहते हैं?

क्या आप आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित करने में सहयोग करना चाहते हैं?

क्या आप देश-विदेश में रहने वाले अपने मित्रों-दोस्तों, रिश्तेदारों को भी आर्य सन्देश पढ़वाना चाहते हैं?

यदि हां! तो

आज ही अपने मोबाइल में टेलिग्राम एप्प डाउनलॉड करें और नीचे दिए लिंक पर क्लिक करके आर्य सन्देश ग्रुप जॉइन करें
https://t.me/aryasandesh110001

- सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
bit.ly/VedicPrakashan
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

सोमवार 03 जुलाई, 2023 से रविवार 09 जुलाई, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 05-06-07 जुलाई, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 05 जुलाई, 2023

अति महत्वपूर्ण सूचना

आप सभी भारत के नागरिकों को सूचित किया जाता है कि, भारत के 22वें विधि आयोग (कानून कमीशन/लॉ कमीशन) द्वारा, दिनांक- 14/06/2023 को, समान नागरिक संहिता (यूनिफॉर्म सिविल कोड) विषय पर, भारत के आम नागरिकों तथा भारत की पंजीकृत धार्मिक संस्थाओं से, उनके सुझाव व विचार मांगे गए हैं।

यह सुझाव व विचार, दिनांक- 13/07/2023 तक, ई-मेल के माध्यम से, अपने घर में बैठे हुए ही, अपने मोबाइल, लैपटॉप, या कम्प्यूटर से, भेजे जा सकते हैं। यह सुझाव व विचार, नीचे दिए गए ई-मेल पते पर अथवा लिंक पर भेजे जा सकते हैं:

ई-मेल : membersecretary-lci@gov.in

लिंक : https://legalaffairs.gov.in/law_commission/ucc/

आप सभी भारत के आम नागरिकों व धार्मिक संस्थाओं से निवेदन है कि, समान नागरिक संहिता के पक्ष में, अपने सुझाव व विचार, भारत विधि आयोग को, अवश्य भेजें। ताकि भारत के सभी नागरिकों, समाजों, धर्मों, पंथों, मजहबों, रिलिजनों, धर्मों पर समान कानून लागू हों सकें, न कि अलग-अलग कानून। यह संदेश सभी को भेजें!

प्रतिष्ठा में,

भारत के सांस्कृतिक सन्तुलन की रक्षा - हम सब का दायित्व
इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, मो. 9540040339

ओ३म्
भारत में फेले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ **सत्यार्थ प्रकाश** सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16	मुद्रित मूल्य ₹60	प्रचारार्थ ₹40
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16	₹100	₹60
पॉकेट संस्करण	₹80	₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण	₹150	₹100
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8	₹150	₹100
उपहार संस्करण	₹1100	₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द	₹200	₹130
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द	₹250	₹170

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

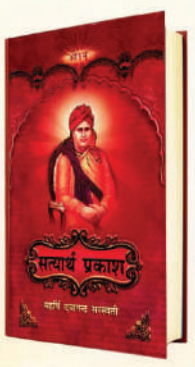

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह